दुबला-पतला, पिंगल शेर और चतुर बंदर

दुबला-पतला, पिंगल शेर
और चतुर बंदर

दुबले-पतले, पिंगल शेर को अपनी पीली-सुनहरी खाल पर बहुत घमंड था, लेकिन उसे दुबला-पतला होना पसंद न था.

"अगर यह पशु चुपचाप खड़े रहें तो मैं आसानी से इनका शिकार कर पाऊँगा!" उसने अपने-आप से कहा. लेकिन ऐसा होता नहीं था. अगर वह ज़ेबरे का शिकार करना चाहता तो ज़ेबरा भाग खड़ा होता. जिराफ़ और हाथियों के साथ भी वैसा ही होता. जिसे भी वह पकड़ने की कोशिश करता वह भाग जाता. जितनी उसे भूख लगती उतना ही वह भागता, जितना वह भागता उतनी ही उसे भूख लगती और वह और दुबला हो जाता.

“मुझे अपने छोटे मित्रों के लिए कुछ करना चाहिये,” अठारवीं बार खिचड़ी खाने के बाद एक दिन पिंगल शेर ने, जो अब दुबला-पतला न था, मन-ही-मन सोचा.

यही सोचकर वह उस ज़ेबरे पर दहाड़ा जो खरगोशों की लगाईं गाजरें चटपट खा रहा था.

आखिरकार शेर की भेंट मोटे-ताज़े और फुर्तीले खरगोशों के एक परिवार के साथ हुई. वह उन सब को निगल जाता, पर उसके मुंह से लार टपकी ही थी कि खरगोशों ने उसे एक बड़े कटोरे में ढेर सारी गाजर की खिचड़ी दी जिसमें मशरुम, सब्जियाँ और ताज़ा मछलियाँ भी डालीं गईं थीं. खिचड़ी बहुत स्वादिष्ट थी. खिचड़ी इतनी अच्छी थी कि कुछ समय के लिए, शेर ने हर रात खरगोशों के साथ भोजन किया और जल्दी ही वह खूब मोटा-ताज़ा हो गया.

वह उस हाथी पर दहाड़ा जो खरगोशों की मशरुम को कुचल रहा था.

वह उस मगरमच्छ पर भी दहाड़ा जो नदी की मछलियां पकड़ कर खा रहा था. आखिर उन मोटे-ताज़े, फुर्तीले खरगोशों को स्वादिष्ट खिचड़ी बनाने के लिये मछलियां चाहियें थीं.

अब खरगोश बहुत प्रसन्न थे और शेर भी प्रसन्न था. वह खूब खिचड़ी खाता था. लेकिन एक दिन जब शेर खरगोशों के घर आया तो वहां कोई न था. खरगोश कहीं चले गये थे और घर में थोड़ी-सी भी खिचड़ी नहीं थी.

"प्रिय शेर," खरगोश एक पत्र छोड़ गये थे, "हम अपनी दादी को मिलने जा रहे हैं. जब भी आपका मन करे, आप हमारे देगची में गाजर की खिचड़ी बना लें."

अब समस्या यह थी कि शेर के पंजे इतने बड़े और बेडौल थे कि खिचड़ी के लिये वह न मशरुम तोड़ पाया, न सब्जियाँ.

और उसे मछली पकड़ना भी न आता था. खरगोशों की मछली पकड़ने वाली डंडी लेकर उसने बार-बार कोशिश की लेकिन मछलियाँ कांटे में फंसती ही न थीं.

सबसे बुरी बात तो यह हुई कि तपती गर्मी में बगीचे में गाजरें मुरझाने लगीं.

जल्दी ही शेर फिर दुबला-पतला हो गया. एक दिन एक तालाब के निकट बैठे, पानी में उसने अपनी परछाई देखी.

“कितनी डरावनी है मेरी परछाई,” उसने अपने आप से कहा, “एक-एक पसली दिखाई दे रही है. अब खाने के लिये मुझे फिर से जानवरों के पीछे भागना पड़ेगा.”
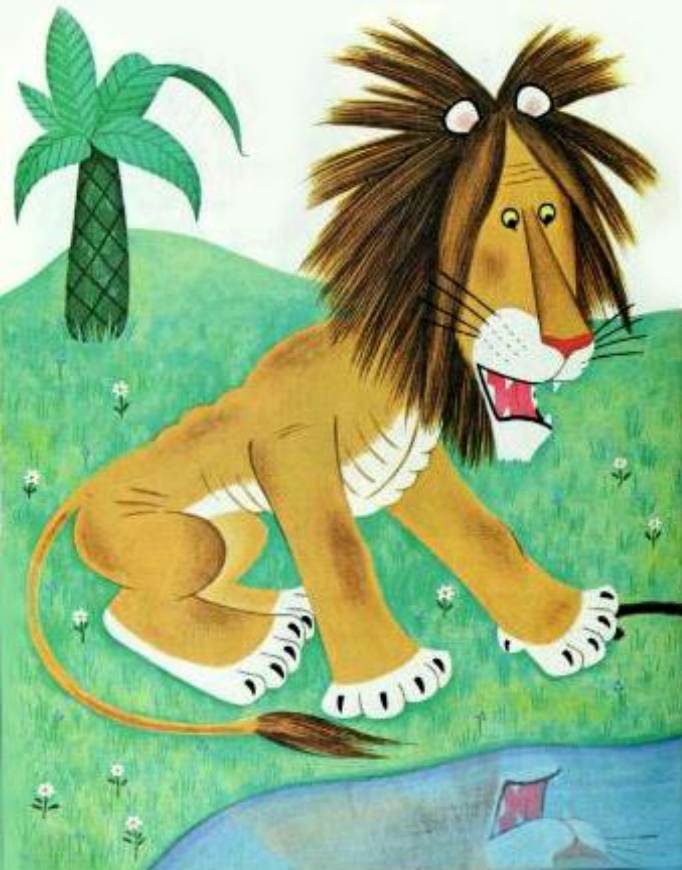
तभी एक छोटा-सा बंदर पानी पीने के लिये तालाब के निकट आया. उसने दुबले-पतले शेर को देखा ही नहीं. लेकिन शेर ने उसे देख लिया और पलक झपकने से पहले ही अपना पंजा उसकी दुम पर रख दिया.

“हे भगवान्!” बंदर चिल्लाया, “शेर!” और उसने अपनी आँखों पर अपने हाथ रख दिए.

दुबले-पतले शेर ने एक आह भरी. "काश तुम एक ज़ेबरा होते," उसने बंदर से कहा. "तुम तो इतने छोटे हो कि मेरे खाली पेट का एक कोना भी न भर पाओगे."

बंदर ने अपनी आँखों से अपने हाथ हटा दिये और शेर की ओर देखा.

"ओह, हाँ. मैं तो बहुत छोटा हूँ," उसने झटपट कहा. "मैं तो आपके किसी काम का नहीं."

"सच कहा तुम ने," शेर बोला. "और अगर तुम ज़ेबरा जितने बड़े भी होते तब भी मैं गाजर की खिचड़ी खाना ही पसंद करता."

"गाजर की खिचड़ी?" बंदर ने सोचते हुए कहा. "वह खिचड़ी जिसमें गाजरे डाली जाती हैं, क्या वही खिचड़ी न?"

"और मशरुम और सब्जियां और बढ़िया, ताज़ा मछली भी," शेर ने कहा. "मैं स्वयं ऐसी खिचड़ी बना लेता लेकिन मुझसे बनती ही नहीं है. सब कुछ गलत हो जाता है."

"अच्छा," बंदर बोला, "मैं आपके लिये खिचड़ी बनाऊँगा. बस अपना पंजा मेरी दुम से हटा लें........"

शेर ने पंजा हटा लिया. बंदर तुरंत काम में जुट गया हालाँकि उसने गाजर की खिचड़ी कभी न बनाई थी. उसने गाजरों के बगीचे में पानी दिया ताकि अच्छी, ताज़ा गाजरें पैदा हों.
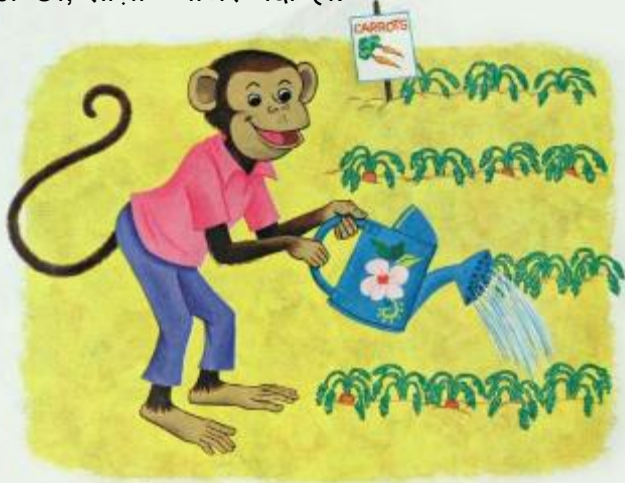
अपने छोटे हाथों से उसने मशरुम और सब्जियाँ तोड़ीं.

कांटे पर उसने सही चारा लगाकर अच्छी, चमकीली मछलियां पकड़ीं.

आखिरकार खिचड़ी बनकर तैयार हो गयी.

पर जैसी ही उस दुबले-पतले शेर ने खिचड़ी चखी वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा. उसकी आँखों से बड़े-बड़े आंसू टपकने लगे.

"ओह, बंदर, इसमें बहुत ज़्यादा प्याज़ हैं!" वह चिल्लाया. "अब मैं तुम्हें खा जाऊँगा!'

"मुझे क्षमा करें!" बंदर ने डरते हुए कहा. "जिस शेर से पिछली बार मेरी भेंट हुई थी उसे प्याज बहुत अच्छे लगते थे. मैं फिर से खिचड़ी बनाता हूँ.'

"जल्दी करो," शेर गुस्से से बोला. अब उसे और अधिक भूख लग गयी थी.

बंदर ने फटाफट नई खिचड़ी बनाई. लेकिन जब शेर ने खिचड़ी चखी तो उसे ज़ोर की छींक आई; छींक इतने ज़ोर की थी कि बंदर उड़ कर दूर नदी में जा गिरा.

"बहुत मिर्च है!" शेर चिल्लाया. "नदी से बाहर आओ! जल्दी आओ ताकि मैं तुम्हें खा सकूं!"

बंदर नदी से बाहर आया. "मुझे एक बार फिर क्षमा करें," उसने कहा. "अगली बार मैं अपनी गुप्त विधि से खिचड़ी बनाऊंगा. सब शेरों को वह अच्छी लगती है."

वही हुआ. दुबले-पतले शेर ने तीसरी बार बनाई खिचड़ी चखी, वह बहुत ही स्वादिष्ट थी. शेर सारी खिचड़ी चट कर गया और पीठ के बल लेट कर खर्राटे लेने लगा. जब से खरगोश अपनी दादी के घर गये थे तब से शेर को ऐसी गहरी नींद न आई थी.

“ठीक है,” शेर गुर्राया, “जो करना है, झटपट करो. मुझे भयंकर भूख लगी हुई है.”

बंदर झटपट काम करने लगा. उसने हरी सब्जियां इकट्ठी की, नई गाजरे उखाड़ कर लाया, ताज़ा मछली पकड़ी. फिर वह नारियल के एक पेड़ पर चढ़ गया और तीन बड़े नारियल तोड़ कर लाया.

“मुझे विश्वास है कि कोकोनट मिल्क मिलाने से गाजर की खिचड़ी स्वादिष्ट हो जायेगी,” उसने अपने आप से फुसफुसा कर कहा.

"ऐसी स्वादिष्ट खिचड़ी मैं कल फिर बनाऊँगा," बंदर ने कहा. और अगले दिन उसने फिर से गाजर की खिचड़ी बनाई, और उसके अगले दिन और उसके अगले दिन और उसके अगले दिन भी खिचड़ी बनाई. जल्दी ही शेर फिर से खूब मोटा-ताज़ा हो गया. अब उसके मुँह से कभी कोई कठोर बात न निकलती थी, बस कभी-कभार वह ज़ेबरे या हाथी पर दहाड़ देता था.

जब आखिरकार खरगोश दादी के घर से वापस लौटे तो बंदर ने उन सब के लिये एक बड़ी देगची में गाजर की खिचड़ी बनाई. (खिचड़ी से भरी एक बड़ी देगची वह हमेशा आग पर चढ़ा कर ही रखता था. इस तरह वह बहुत सुरक्षित महसूस करता था.)

शेर और बंदर और सारे खरगोश एक साथ बैठ कर खिचड़ी खाने लगे. सब खरगोशों का कहना था कि कोकोनट मिल्क के साथ बनी खिचड़ी बिना कोकोनट मिल्क के बनी खिचड़ी से अधिक स्वादिष्ट थी.

"अगर तुम हमारे साथ यहाँ रहोगे तो हमें बहुत ख़ुशी होगी," खरगोशों ने बंदर से कहा. "तुम खिचड़ी के लिये हर दिन नारियल तोड़ कर ला सकते हो."

"तुम्हारे लिये नारियल लाकर मुझे ख़ुशी ही होगी," बंदर ने बड़ी विनम्रता से कहा, "लेकिन अगर आप बुरा न माने तो मैं शेर के साथ ही रहना चाहूँगा."

शेर और बंदर इकट्ठे वहां से चल दिए. वह दोनों शेर के प्रिय पेड़ के नीचे रात-भर मज़े से सोये.

शेर गहरी नींद सोया क्योंकि गाजर की स्वादिष्ट खिचड़ी खाकर उसका पेट खूब भरा हुआ था. बंदर गहरी नींद सोया क्योंकि वह जानता था कि एक छोटे से बंदर के लिए ज़ोर से दहाड़ने वाले, मोटे-ताज़े शेर से अच्छा मित्र कौन हो सकता था.

समाप्त